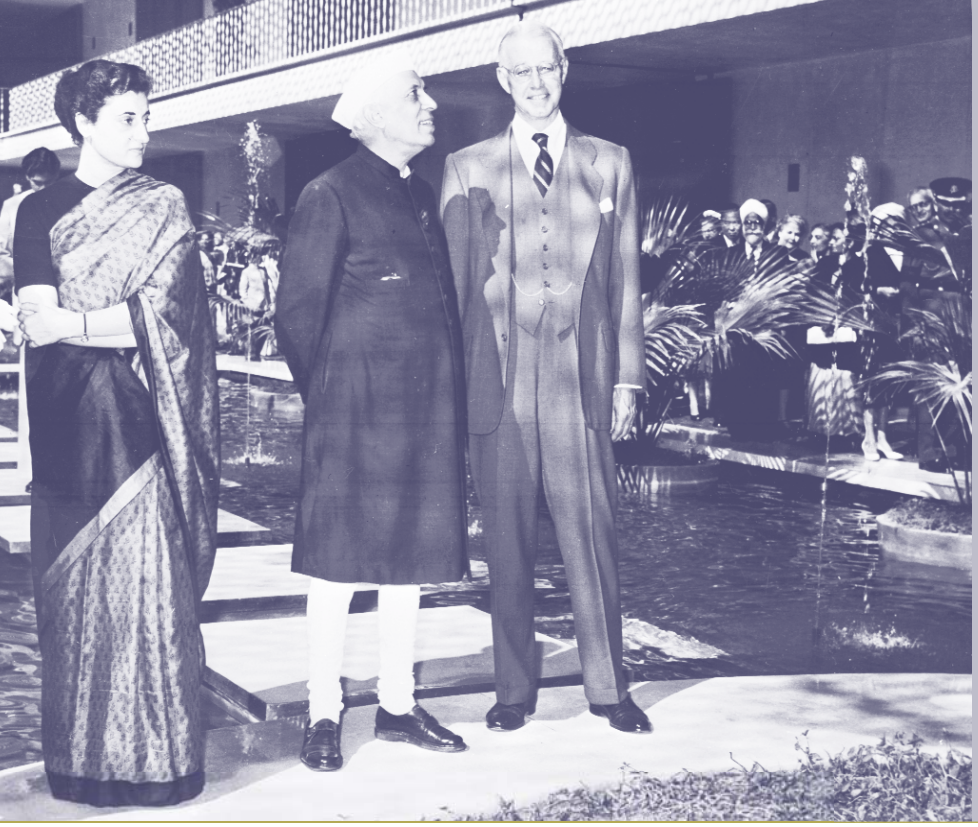

नई दिल्ली में 5 जनवरी 1959 को प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू और अन्य गणमान्य अतिथियों की उपस्थिति में नए **अमेरिकी दूतावास** का शुभारंभ हुआ। ''मैं भवन को देख कर सम्मोहित हो गया। मेरे विचार से यह बहुत सुंदर है और इसमें आधुनिकतम तकनीकों के साथ विभिन्न भारतीय मोटिफों का सम्मिश्रण किया गया है,'' बाद में नेहरू ने कहा।

दूतावास के भवन का निर्माण अमेरिकी सरकार के इस नए निर्देश के तहत किया गया था कि विदेश में इन भवनों का निर्माण मेज़बान देश के सांस्कृतिक, वास्तु शिल्पीय तथा जलवायु के स्वरूप को ध्यान में रख कर किया जाए। इस भवन का डिज़ाइन वास्तुशिल्पी एडवर्ड डी. स्टोन ने तैयार किया और इसमें भारत में ही निर्मित इंटरनल-डायल टेलीफोन एक्सचेंज भी लगाया गया।

शुभारंभ समारोह के अवसर पर अमेरिकी राजदूत एल्सवर्थ बंकर ने कहा, ''मेरे लिए यह भवन दो देशों के आपसी सहयोग का प्रतीक है। शुरू से समापन तक यह एक साझा काम बना रहा।''

http://www.youtube.com/watch?v=chlTsf000sM
http://www.time.com/time/magazine/article/0,9171,937065,00.html

50 साल पहले

क्या कर रहे थे 1959 में अमेरिकी और भारतीय

दीपांजली काकाती

ग्यारह देशों की यात्रा पर निकले राष्ट्रपति **ड्वाइट डी. आइजनहावर** जब नई दिल्ली पहुंचे तो दस लाख से भी अधिक लोगों ने उनका स्वागत किया। जब राष्ट्रपति आइजनहावर और प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू को लेकर मोटरों का काफिला पालम हवाई अड्डे से राष्ट्रपति भवन की ओर चला तो उत्साहित भीड़ ने 'आइजनहावर जिंदाबाद' के नारे लगाए। भारत यात्रा के इस अवसर पर अमेरिकी राष्ट्रपति के स्वागत में सारा शहर रोशनियों से जगमगा रहा था। और चारों ओर हज़ारों भारतीय तथा अमेरिकी ध्वज फहरा रहे थे।

भारत में अपने चार दिवसीय प्रवास में राष्ट्रपति आइजनहावर ने संसद को संबोधित किया, राजकीय भोज में शामिल हुए, दिल्ली विश्वविद्यालय से डॉक्टर ऑफ लॉ की मानद उपाधि प्राप्त की, भारतीय गायकों और संगीतकारों ने उनका मनोरंजन किया, आगरा में ताजमहल देखा और वहां के नजदीक के गांव में गए। राष्ट्रपति ने भारतीय राजनेताओं से लेकर आम नागरिकों तक के दिलों में जगह बना ली जो आगामी दशकों में प्रमुख अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर असहमति के बावजूद टिकी रही।

नई दिल्ली के रामलीला मैदान में उससे पहले तक लोगों की उतनी भीड़ कभी जमा नहीं हुई थी। उस जनसमूह को संबोधित करते हुए राष्ट्रपति आइजनहावर ने कहा, ''इस शानदार समारोह में मैं साथी लोकतंत्र अमेरिका के लिए लगभग पांच लाख लोगों की ओर से आत्मा को झकझोर देने वाला और भारत व अमेरिका के संयुक्त उद्देश्य की सहमति का प्रमाण देख रहा हूं: स्वतंत्रता में शांति और मैत्री का उद्देश्य... हम, जो स्वतंत्र हैं और ईश्वर तथा प्रकृति प्रदत्त अन्य सभी सौगातों में स्वतंत्रता को सर्वोपरि स्थान देते हैं, एक-दूसरे को और अधिक जानें, एक-दूसरे पर अधिक विश्वास करें और सहयोग दें।''

http://www.presidency.ucsb.edu/ws/index.php?pid=11620&st=eisenhower&st1=India

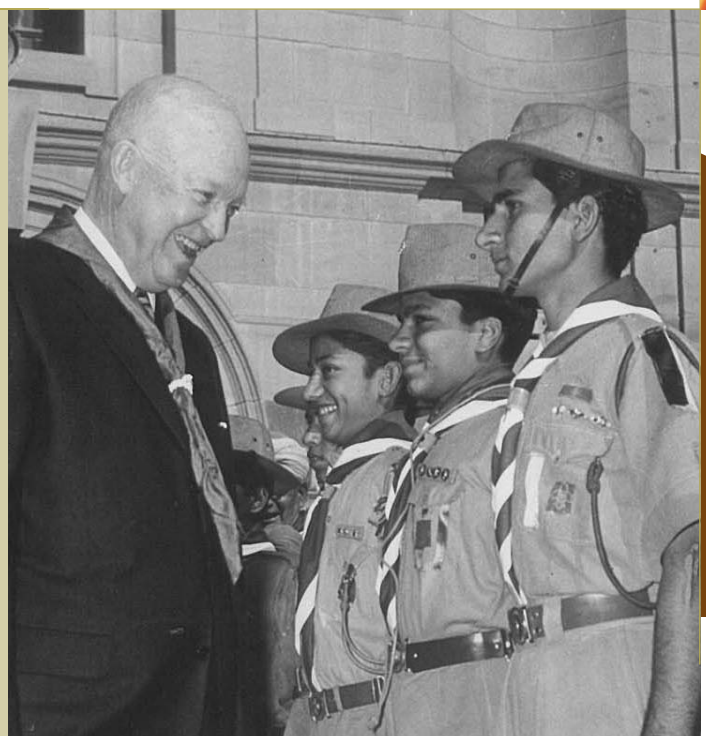

अमेरिका ने नई दिल्ली में आयोजित प्रथम विश्व कृषि मेले में 25 लाख डॉलर की लागत से **अमेरिकी मेला** का प्रदर्शन किया। किसी भी अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनी में यह अमेरिका का सबसे बड़ा प्रयास था।

इस अमेरिकी मेले का उद्घाटन राष्ट्रपति ड्वाइट डी. आइजनहावर ने अपनी भारत यात्रा के दौरान दिसंबर माह में किया। उन्होंने कहा, ''इस मेले में अमेरिकी प्रदर्शन इस बात का प्रतीक है कि एक स्वस्थ, सार्थक और शांतिपूर्ण विश्व जिसमें सभी राष्ट्रों के परिवार युद्ध और अकाल के भय से मुक्त होकर जी सकें, उसे आगे बढ़ाने में कृषि की क्या भूमिका हो सकती है।''

अमेरिकी प्रदर्शनी 'भोजन, परिवार मैत्री और स्वतंत्रता' विषय पर तैयार की गई थी। प्रदर्शनी में विभिन्न नमूने दो हैक्टेयर से भी बड़े क्षेत्र में फैली चार इमारतों में प्रदर्शित किए गए थे। उसमें दर्शकों ने नाभिकीय प्रशिक्षण रिएक्टर भी देखा जिसमें कृषि में काम आने वाले रेडियो आइसोटोप बनते थे।

इसके अलावा नवीनतम कृषि उपकरण, अमेरिकी फार्मों के चित्र (रिप्रोडक्शन), डेयरी का एक दूध दुहने का कक्ष, कुक्कुटशाला, पैकेजिंग मशीनरी, संकर अनाज और अमेरिकी कृषि अनुसंधान के प्रदर्शन आदि भी दिखाए गए। अमेरिका के 4-एच क्लब के सदस्यों ने सजीव लोक संगीत और नृत्य का प्रदर्शन किया।

http://www.presidency.ucsb.edu/ws/index.php?pid=11618

भारत के सार्वजनिक टेलीविजन नेटवर्क **दूरदर्शन** ने 15 सितंबर को नई दिल्ली में एक कामचलाऊ स्टूडियो से आधे घंटे का प्रसारण शुरू किया।

अमेरिका ने प्रायोगिक कार्यक्रम के लिए कुछ उपकरण उपलब्ध कराए। इस कार्यक्रम का उद्देश्य सामुदायिक विकास तथा औपचारिक शिक्षा में टेलीविजन के योगदान का पता लगाना था।

शुरू में सप्ताह में केवल दो बार कार्यक्रमों का प्रसारण किया जाता था जिन्हें नई दिल्ली और आसपास के 180 टेलीविजन क्लबों के सदस्य देखते थे। उन्हें यूनेस्को ने मुफ्त टीवी सेट दिए थे।

आज, दूरदर्शन की पहुंच भारत की 90 फीसदी आबादी तक है।

http://www.ddindia.gov.in/Kendra/Delhi/Program+Column+3/delhi.htm

सामने की कतार में (बाएं से): वाल्टर एम. शीरा, डोनाल्ड के. ''डेके'' स्लायटन, जॉन एच. ग्लेन जूनियर और स्कॉट कार्पेंटर। पीछे की कतार में (बाएं से): एलन बी. शेपर्ड जूनियर, विर्जिल आई. ''गस'' ग्रिसम और एल. गॉर्डन कूपर जूनियर।

वाशिंगटन डी.सी. में 9 अप्रैल को एक प्रेस सम्मेलन में अमेरिका के प्रथम **अंतरिक्ष यात्रियों**- मर्करी अभियान के सातों अंतरिक्ष यात्रियों का विश्व भर से परिचय कराया गया। स्कॉट कार्पेंटर, एल.गॉर्डन कूपर जूनियर, जॉन एच. ग्लेन जूनियर, विर्जिल आइ. 'गस' ग्रिसम, वाल्टर एम. शीरा, एलन बी. शेपर्ड जूनियर तथा डोनाल्ड के. 'डेके' स्लायटन अंतरिक्ष अभियान के नए हीरो बन गए।

प्रोजेक्ट मर्करी अमेरिका की मानव को अंतरिक्ष में भेजने की पहली परियोजना थी जो 1963 में पूरी हो गई। इस परियोजना के तहत छह समानव और आठ स्वचालित उड़ानें भरी गईं जिनसे साबित हो गया कि अंतरिक्ष में समानव उड़ान संभव है। इन्होंने जैमिनी तथा अपोलो कार्यक्रमों के साथ ही मानव की भावी अंतरिक्ष उड़ानों का मार्ग प्रशस्त किया।

28 मई को अमेरिकी अंतरिक्ष कार्यक्रम ने एक और कीर्तिमान बनाया, जब एबल तथा मिस बेकर नामक दो बंदर उप-कक्षीय अंतरिक्ष उड़ान भर कर पृथ्वी पर सफलतापूर्वक लौट आए। वे अंतरिक्ष से पृथ्वी पर सकुशल लौटने वाले प्रथम जीव थे।

http://wwwpao.ksc.nasa.gov/history/mercury/mercury.htm

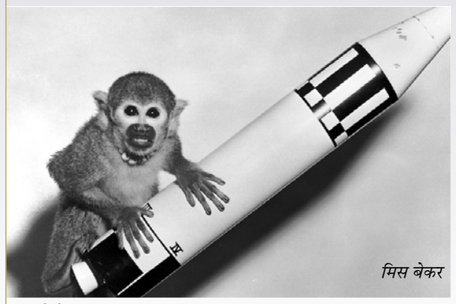

मिस बेकर

फोटो: साभार नासा

सबसे लोकप्रिय होकर दुनिया में मशहूर फैशन डॉल **बार्बी** का आगमन 9 मार्च को हुआ। इसके अविष्कारक और खिलौनों की कंपनी माटेल के सह-संस्थापक रूथ हैंडलर ने अपनी बेटी बार्बरा के नाम पर इसका नाम बार्बी रखा। काली-सफेद तैराकी पोशाक में सजी खास पौनी-टेल वाली बार्बी की जानकारी न्यू यॉर्क सिटी में आयोजित अमेरिकन इंटरनेशनल टॉय फेयर में संपूर्ण विश्व को दी गई।

पहली बार्बी 3 डॉलर में बिकी। इसकी बिक्री बहुत सफल रही और 1959 में 3,51,000 बार्बी डॉल बिकीं। तब से अब तक साढ़े ग्यारह इंच की बार्बी डॉल 80 रूप रख चुकी है- रॉक स्टार से फ्लाइट अटेंडेंट, पुरातत्वविज्ञानी और अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव की उम्मीदवार तक।

1982 में इंडिया बार्बी के रूप में आने के साथ ही बार्बी भारतीय हो गई। वह राजकुमारी इंडिया बार्बी और दीवाली बार्बी के रूप में भी सामने आई।

आज बार्बी 1.5 अरब डॉलर प्रति वर्ष का उद्योग बन चुकी है। 'द 101 मोस्ट इंफ्लुएंशियल पीपुल हू नेवर लिव्ड' पुस्तक में बार्बी को 43 वां स्थान मिला।

http://www.barbiecollector.com/

मैक्स नैश © ए.पी.- डब्ल्यू डब्ल्यू पी.

एकेडमी अवार्ड समारोह में विजय का सेहरा जिगी के सिर बंधा और उसे नौ **ऑस्करों** से नवाजा गया। सर्वश्रेष्ठ फिल्म और सर्वश्रेष्ठ निर्देशक (विंसेंटे मिनेली) के साथ ही उसे संगीत, वेशभूषा और सिनेमाटोग्राफी के लिए भी पुरस्कृत किया गया।

यह संगीत प्रधान फिल्म फ्रांसीसी लेखक कोलेत के उपन्यास पर आधारित थी। इसमें लेज्ली कैरन, लुई जॉर्डन तथा मॉरिस शेवालिए (नीचे, बाएं से दाएं- सामने की ओर) ने अभिनय किया। फिल्म की कहानी पेरिस की एक ऐसी लड़की के जीवन पर आधारित है जिसे एक सेक्स वर्कर बनने की शिक्षा दी जा रही है। उसका संबंध एक धनी, सुसंस्कृत व्यक्ति से हो जाता है जिसे अहसास होता है कि वह जिगी से प्यार करने लगा है। और, अंत में वह जिगी से विवाह कर लेता है।

जिस दिन इस फिल्म ने 9 ऑस्कर जीते, इसके प्रॉडक्शन स्टूडियो मेट्रो-गोल्डविन-मेयर (एमजीएम) के कार्यालय में सभी टेलीफोन ऑपरेटरों से कह दिया गया कि जो भी फोन आए, उसके जवाब में कहें, हैलो, एम-जिगी-एम।'' भारत में जिगी 1959 में रिलीज हुई।

http://movies.nytimes.com/movie/19761/Gigi/overview

© ए.पी.- डब्ल्यू डब्ल्यू पी./एमजीएम

व्हाइट हाउस फोटो- यू.पी.आई. © बेटमैन/कोर्बिस

हवाई 21 अगस्त को राष्ट्रपति ड्वाइट डी. आइजनहावर के उद्घोषणा पर हस्ताक्षर करने के साथ ही अमेरिका का पचासवां राज्य बन गया। उन्होंने 50 सितारों वाले अमेरिकी ध्वज के डिज़ाइन की भी घोषणा की।

उन्होंने कहा, ''हम इसकी समृद्धि, सुरक्षा, खुशी और अन्य राज्यों के साथ गहरे संबंधों की आशा करेंगे। हमें पता है कि यह 49 राज्यों का पूर्ण राज्य के रूप में साथ निभाकर इस संघ को एक मजबूत राष्ट्र- पहले से भी मजबूत नागरिकों का राष्ट्र बनाने में अपनी भूमिका निभाने के लिए तत्पर है। इसलिए हम सब इसे सौभाग्यशाली होने का आशीर्वाद देते हैं।

राष्ट्रपति आइजनहावर ने अपने प्रशासन के प्रारंभ में ही हवाई को राज्य का दर्जा देने के विचार का समर्थन किया था, लेकिन 1959 में हवाई एडमिशन एक्ट लागू होने तक इसके लिए कांग्रेस से कोई समुचित कानून पास नहीं हो सका। उन्होंने 18 मार्च को हस्ताक्षर करके इससे संबंधित बिल को कानूनी जामा पहना दिया। हवाई के नागरिकों ने जनमत-संग्रह में जून में ही हवाई को राज्य का दर्जा देने के लिए अपनी स्वीकृति दे दी थी। जिसके कारण अगस्त में इसकी उद्घोषणा करने में सहूलियत हो गई।

http://gohawaii.about.com/od/hawaiianhistory3/a/admission_day.htm

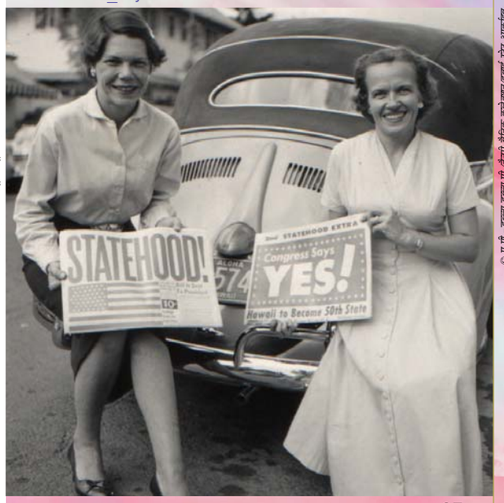

© ए.पी.- डब्ल्यू डब्ल्यू पी./नैशनल कलेक्शन/लायंस स्टेट अकादेमी